Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Impact Factor (IIJIF): 5.454 | Vol. 8, Issue 1 | May. 2020 - October 2020 | pp. 98-101

संस्कृत : प्राचीन युग से वर्तमान तक की स्थिति

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

डॉ. रजनीश कुमार बारहठ
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कन्या महाविद्यालय, तारानगर, चूरू (राजस्थान)

शोध सारांश

भाषा, संस्कृति एवं सभ्यता की उत्पत्ति के दृष्टिकोण से भारत का स्थान प्राचीनतम एवं मूर्धन्य रूप से स्वीकार किया जाता है। भाषा एवं लिपि के विकास क्रम में यहां संस्कृत प्राचीनकाल से ही स्थापित है। भारोपीय भाषापरिवार में संस्कृत, लैटिन व ग्रीक भाषाओं को सबसे प्राचीन एवं अन्य भाषाओं की जननी के रूप में माना गया है। ऋग्वेद विश्व के सबसे प्राचीन लिखित ग्रंथ है। इस प्रकार संस्कृत न केवल भारतवर्ष की अपितु संपूर्ण विश्व की प्रमुख भाषा है। वैदिककाल से लेकर हजारों वर्षो तक संस्कृत भाषा व साहित्य का विस्तार हुआ। साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि क्षेत्रों में संस्कृत भाषा को आधार बनाकर विपुल अंश की रचना की गई। प्राचीनभारत के संपूर्ण कालखण्ड में संस्कृत ही प्रमुख भाषा थी। किन्तु मध्ययुग में मुस्लिम व विदेशी आक्रान्ताओं के आगमन से भारत में अन्य भाषाओं व संस्कृति का आगमन व विस्तार हुआ। आधुनिकयुग में अंग्रेजों के आगमन के बाद भारतीय शिक्षाप्रणाली में बहुत से परिवर्तन हुए। आंग्लयुग में ब्रिटिश शासकीय आदेशों से प्राच्यविद्या के स्थान पर आंग्लविद्या व साहित्य का विस्तार होने लगा। अब संस्कृत प्राचीनयुग की भांति प्रमुख भाषा न रहकर शास्त्रीयभाषा बनकर रह गयी। स्वतत्रंता प्राप्ति के बाद भारतीय जनमानस द्वारा भारत की धरोहर संस्कृत भाषा की पुन: प्रतिष्ठा के लिए विविध प्रयास किये गये। यद्यपि संस्कृत अब बोल-चाल की भाषा नहीं है, फिर भी हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं जीवनमूल्यों का आधार होने के कारण संस्कृत को पाठ्यक्रम एवं शिक्षाप्रणाली में समुचित स्थान प्रदान किया गया है। इस प्रकार संस्कृत आदियुग से लेकर अब तक अपने स्वरूप को बनाए रखे हुये है।

संकेताक्षर : *प्रमुख भाषा, वैज्ञानिकता, प्रासंगिक*

प्रस्तावना

विकास, वैज्ञानिकता व परिवर्तन के प्रवृत्तिमय युग में किसी भी विषय अथवा विषयवस्तु का महत्त्व उसकी उपयोगिता व प्रासंगिकता पर आधारित होता है। यह सिद्धान्त मानव जीवन के सभी आयामों व क्षेत्रों को प्रभावित करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी यह सिद्धान्त दृष्टिगत होता है तथा इसे अनुपयुक्त भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि विकास क्रम में समय के अनुसार ढलना एवं नूतनताओं का अंगीकरण आवश्यक होता है।

उपयोगितावादी दृष्टिकोण के इसी परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा प्रणाली व पाठ्यक्रम में संस्कृत विषय की उपयोगिता व प्रासंगिकता हमारा विचारणीय विषय है। भौतिकता प्रधान व तीव्र जीवनशैली वाले वर्तमान दैनिक जीवन में जिन सिद्धान्तों व विषयों का उपयोग हमें दृष्टिगत होता है, उन्हीं को हम उपयोगी मानते हैं। इसी के चलते आज के पाठ्यक्रम में वे ही विषय उपयोगी हैं जो समयानुकूल व उपयोगी है। तकनीक, प्रबन्धन, व्यवसाय-अध्ययन, गणित, विज्ञान आदि विषयों का बढ़ता प्रयोग इसी तथ्य को पुष्ट करता है। ऐसे में संस्कृत विषय का क्या महत्त्व एवं उपयोगी है? संस्कृत को एक भाषा के रूप में लिया जाये तो ये शास्त्रीय श्रेणी की एवं बहुत ही अल्प लोगों द्वारा प्रयुक्त है, अत: वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को कैसे सुनिश्चित की जाये? यदि हम संस्कृत को एक साहित्य व विषय के रूप में ले तो वर्तमान में उसका क्या महत्त्व है? ऊपर बताये गये उपयोगितावादी तर्क में संस्कृत की प्रासंगिकता कम प्रतीत होती है। किन्तु किसी भी विषय या वस्तु की महत्ता का एक ही आयाम या दृष्टिकोण नहीं होता है। भौतिक

महत्त्व, स्वार्थ निहितता ही किसी विषय की उपयोगिता का एकमात्र मापदण्ड नहीं हो सकता है।

संस्कृत विषय के महत्त्व को भौतिक स्वार्थो के साथ जोड़ना नितान्त अनुचित एवं एकपक्षीय धारणा है। यदि प्रत्येक विषय को दैनिक स्वार्थो के साथ ही जोड़ा जाये तो बहुत से अन्य विषय भी अनुपयोगी हो जायेंगे। जैसे- दर्शनशास्त्र, इतिहास इत्यादि। संस्कृत विषय के महत्त्व को समझने के लिए दृष्टिकोण में व्यापकता होनी चाहिए। जिस तरह कोई अल्पज्ञ यह माने कि शरीर के लिए मात्र-भोजन व जलादि प्रत्यक्ष पदार्थो की आवश्यकता है क्योंकि वे हमें दिखाई देते हैं तथा उनको हम नित्य ग्रहण करते हैं। लेकिन यह विचार अपूर्ण है क्योंकि जीवन व शरीर के लिए मात्र भोजनादि भौतिक पदार्थ ही पर्याप्त नहीं प्रत्युत उसका मूल प्राणतत्त्व है जिसके बिना ये सब निरर्थक हैं। तद्वत् ही हमारे ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति के संदर्भ में संस्कृत प्राणस्वरूप है। हमारे नैतिक मूल्य, आदर्श परम्पराएँ व संस्कृति संस्कृत से ही सृजित, निर्मित, प्रेरित, नियंत्रित एवं संरक्षित है। संस्कृत हमारे राष्ट्र के अभिज्ञानस्वरूप है। भले ही समय-चक्र-क्रम में संस्कृत आज जनसामान्य की भाषा तो नहीं है किन्तु हमारा इतिहास, संस्कृति, रचनाएँ, कृतियाँ तो संस्कृत में ही निबद्ध है। यूनान, जापान, इंग्लैंड आदि सभी राष्ट्र अपने अतीत को महत्त्व देते हैं तथा विकास की दौड़ में भी आगे है। इस प्रकार हमें भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली व पाठ्यक्रम योजना में संस्कृत को समुचित स्थान देते हुए वर्तमान-विषयों के साथ विकास पथ पर अग्रसर रहना चाहिए।

संस्कृत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इतिहास एवं भाषा-विज्ञान का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से यह भारोपीय-परिवार की भाषा है जो प्राचीनतम एवं सबसे समृद्ध भाषा परिवार है । भारत में सभ्यता व संस्कृति के उत्पत्तिकाल से ही संस्कृत भाषा का आविर्भाव हो चुका था। विश्व के प्राचीनतम लिखित ग्रथं ऋग्वेद संस्कृत में ही निबद्ध है। ऋग्वेद की पाण्डुलिपियों को यूनेस्को विश्व-धरोहर सूची में स्थान दिया गया है। वैदिक काल में संस्कृत ही भारतवर्ष की प्रमुख भाषा थी। सम्पूर्ण वैदिकसाहित्य (संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद) संस्कृत में ही लिखा गया है। संस्कृत साहित्य के इतिहास में यह कालखण्ड वैदिक युग व वैदिक साहित्य के नाम से अभिहित है। वैदिक साहित्य के उपरान्त लौकिक संस्कृत के युग का आरंभ होता है। लौकिक संस्कृत साहित्य का आदि ग्रन्थ रामायण माना जाता है। जिसके रचनाकार आदिकवि वाल्मीकि थे। इसके उपरान्त महाभारत महाकाव्य की रचना हुई, जिसके कृतिकार वेदव्यास माने गये। उक्त दोनों ही महाकाव्य लौकिक संस्कृत-साहित्य के प्राण बने। इन्हीं दो महाकाव्यों को आधार बनाकर आगे आने वाले समय कवियों ने अपने काव्य का विस्तार किया। रामायण और महाभारत आज भी हमारे जीवन के आदर्श है। हमारे रीति-रिवाज, परंपराएं, दैनिकचर्या आज भी इन महाकाव्यों में वर्णित आदर्शो से अनुप्राणित है।

रामायणकाल एवं महाभारतकाल के उपरान्त लौकिक संस्कृत साहित्य खूब फला फूला। अश्वघोष, कालिदास, बाणभट्ट, श्री हर्ष, भारवि, माघ, दण्डी, भास आदि उत्कृष्ट कवियों ने अपने प्रतिभातिरेक से संस्कृतसाहित्य को अनुपम कृतियाँ भेंट करके उसके गौरव को बढ़या।

भारतीय इतिहास का गुप्तयुग (चतुर्थ शताब्दी) एवं वर्धनयुग (छठवीं शताब्दी) संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग था। इस प्रकार वैदिक काल से लेकर संपूर्ण प्राचीन भारत का इतिहास संस्कृत से ओतप्रोत था।

12वीं सदी के बाद विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण से भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्य एवं परंपराओं इत्यादि सभी में आमूलचूक परिवर्तन हुए। इसी दौर में भारत में उर्दू, फारसी, अरबी और तुर्की आदि विदेशी भाषाओं एवं साहित्य का विस्तार हुआ। विदेशी शासकों ने अपने धर्म व सम्प्रदाय के अनुसार अपनी भाषाओं व साहित्य को आश्रय दिया। इस दौर में संस्कृत का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होने लगा। अब वह जनसामान्य व भारत की प्रमुख भाषा न होकर शास्त्रीय और प्राच्यभाषा के रूप में परिवर्तित होन लगी। साथ ही अपभ्रंश, संस्कृत के तत्सम शब्द एवं अन्य देशी विदेशी भाषाओं से मिलकर हिन्दी का उद्गम और विस्तार हुआ। हिन्दी सरल, सहज एवं साधारण व्यक्ति द्वारा ग्राह्य होने के कारण प्रमुख भाषा के रूप में उभरी।

हिन्दी भाषा का मूल उद्गम, उसके तत्सम शब्द, व्याकरण-नियम, वाक्य-विन्यास, उच्चारण व लेखन तथा लिपि पूर्णत: संस्कृत से निसृत है। इस प्रकार संस्कृत हिन्दी की जननी भाषा के रूप में सिद्ध होती है।

संस्कृत और ब्रिटिश युगीन भारत

मध्यकाल के बाद 16वीं सदी में भारत में अग्रंजो का आगमन हुआ। अंग्रेजों ने भारत को अपने लाभ और व्यवसाय की दृष्टि से देखा, जिसका प्रभाव भारतीय शिक्षा और साहित्य पर भी पड़ा। अंग्रजों ने प्राच्य शिक्षा व साहित्य की उपेक्षा की एवं पाश्चात्य साहित्य को ही महत्व दिया।

1835 के मैकाले विवरण पत्र में साहित्य शब्द में अंग्रेजी साहित्य शब्द को ही माना गया, अरबी व संस्कृत का नहीं। मैकाले के पत्र से प्राच्यसाहित्य के मुद्रण पर रोक लगा दी गई। मैकाले अपने स्पन्दन सिद्धांत (Downward filtration theory) से ऐसे भारतीय वर्ग को पैदा करना चाहते थे, जो रंग-रूप से तो भारतीय हो किन्तु बुद्धि व्यवहार और आचरण से अंग्रेज हो। मैकाले विवरण पत्र में प्राच्यवादियों के लिए नगण्य बजट दिया गया। इस प्रकार मैकाले शिक्षापद्धति से संस्कृत के अस्तित्व पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

1854 के वुड घोषणापत्र (Wood's despatch) में व्यवसायिक और स्त्री शिक्षा पर तो जोर दिया गया किन्तु उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही था।

इसके बाद 1882-83 के हण्टर आयोग में भी प्राच्यसाहित्य की उपेक्षा ही की गयी। हण्टर आयोग द्वारा धार्मिक शिक्षा के निषेध के नाम पर संस्कृत के प्रभाव को और कम कर दिया गया।

1901 के शिमलासम्मेलन, 1904 के भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, शिक्षानीति 1913, सेडलर आयोग 1917-19, हर्टोग समिति 1929, वर्धा योजना 1937, सार्जेन्ट योजना 1944 के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न सुझाव तो दिये गये लेकिन प्राच्यसाहित्य की उपेक्षा ही रही। उच्चशिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही रहा।

इस प्रकार ब्रिटिशयुगीन भारत में संस्कृत और प्राच्यसाहित्य के अध्ययन-अध्यापन व प्रचार-प्रसार पर विपरित प्रभाव पड़ा किन्तु राष्ट्रवाद व सनातनी भावना से ओत-प्रोत भारतीय जनमानस ने अपने अतीत, संस्कृति, सभ्यता, भाषा व साहित्य को विस्मृत नहीं किया। स्वदेशी की भावना ने ब्रिटिशशासन और उसके द्वारा थोपी गई मानसिकता का विराध किया। आर्यसमाज, रामकृष्णमिशन जैसी संस्थाओं ने भारतीय संस्कृति व साहित्य का पुरजोर समर्थन किया। 1886 में दयानन्द सरस्वती ने ऐन्लो वैदिक कॉलेज, 1902 में स्वामी श्रद्धानन्द ने कांगडी विश्वविद्यालय, 1916 में मदनमोहनमालवीय ने काशी विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह सभी संस्थाए संस्कृत को प्रोत्साहन देने वाली थी।

स्वतंत्रता के बाद की एवं वर्तमान स्थिति

स्वतंत्रता के बाद राधाकृष्णन आयोग 1948-49, मुदालियर आयोग 1953, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, 1953 कोठारी आयोग 1964, शिक्षा नीति 1968 व 1986 के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विविध सुधार किये गये।

त्रिभाषासूत्र में संस्कृत को तृतीयभाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान मिला। 10+2+3 योजना में 10वीं तक संस्कृत तृतीयभाषा के रूप में पढ़ाया जाने लगा। उच्च माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में संस्कृत को वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान दिया गया। बहुत से प्रांतों में संस्कृत शिक्षा हेतु विशेष बोर्ड व विश्वविद्यालयों का गठन किया गया।

वाराणसी, दरभंगा, तिरूपति, नई दिल्ली, पुरी, कालडी, रामटेक, जयपुर वैरावल, हरीद्वार, उज्जैन, बंगलुरू, नलबाड़ी एवं नासिक में संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई है।

भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त होने से संस्कृत का विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में समुचित स्थान है। संघ लोक सेवा आयोग की सर्वोच्च परीक्षा आई.सी.एस/आई.ए.एस में वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत को मान्यता प्राप्त है। साथ ही राज्य आयोगों द्वारा भी वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत को स्थान दिया जाता है। उत्तराखंड सरकार द्वारा संस्कृत को राज्य भाषा का दर्जा दिया गया है।

राष्ट्रीय अध्यापक पात्रता परीक्षा (CTET) एवं बहुत से प्रांतों द्वारा आयोजित आध्यापक पात्रता परीक्षा में भाषा खण्ड में दो भाषाएं अनिवार्य होती है, जिनमें संस्कृत भी विकल्प होता है। हिन्दी माध्यम के छात्रों को अंग्रेजी में कठिनाई होने के कारण एवं संस्कृत और हिन्दी की समानता के कारण वे संस्कृत को ही द्वितीयभाषा के रूप में चुनते हैं। ऐसे में शिक्षक भर्ती के लाखों पदों के दृष्टिकोण से संस्कृत को महत्व बढ़ जाता है।

केन्द्र सरकार द्वारा हाल ही में नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान और लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत वि.वि एवं तिरूपति में स्थित संस्कृत वि.वि को केन्द्रीय वि.वि का दर्जा दिया गया है। ये संस्थान विश्वव्यापी स्तर पर संस्कृत का प्रचार-प्रसार करते हैं। इनमें उच्च माध्यमिक स्तर से पीएच.डी तक का अध्ययन संस्कृत में करवाया जाता है।

संस्कृत अध्यापन व पाठ्यक्रम की दो धाराएं हैं- परंपरागत और आधुनिक। परंपरागत धारा में संस्कृत को संस्कृत माध्यम में और विशेष रूप से पढ़ाया जाता है। इस हेतु अलग से बोर्ड और वि.वि. स्थापित होते हैं, जिनका संचालन संस्कृत शिक्षा विभाग द्वारा होता है। परंपरागत धारा में प्रवेशिका, वरिष्ठ उपाध्याय, शास्त्री, आचार्य आदि के रूप में उपाधि प्रदान की जाती है।

आधुनिक धारा में संस्कृत को अन्य विषयों की भांति वैकल्पिक विषय के रूप में रखा जाता है। बहुत से प्रांतों में कक्षा 10 तक प्राय: संस्कृत को ही तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत को विषय माना जाता है।

हिन्दी भाषा, व्याकरण व शब्दकोष संस्कृत पर ही आधारित होने के कारण संस्कृत का अध्ययन व जानकारी अपरिहार्य है। हिन्दी भाषा के संपूर्ण तत्सम शब्द संस्कृत के हैं तथा तदभ्व शब्द तत्सम शब्दों से बने हैं। साथ ही हिन्दी अपने मानक और पारिभाषिक शब्दावली के शब्दों का निर्माण संस्कृत के आधार पर ही करती है। अत: हम संस्कृत को किसी भी स्थिति में उपेक्षित नहीं कर सकते।

भारत की बहुत सी भाषाओं का निर्माण संस्कृत से ही हुआ है। अत: भाषाई एकता के दृष्टिकोण से भी संस्कृत महत्वपूर्ण है। संस्कृत को सभी भाषा-भाषी प्रांत समान रूप से आदर देते हैं। इस प्रकार संस्कृत राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधती है।

हिन्दी, बौद्ध और जैन धर्म के सभी प्राचीन स्रोत व ग्रंथ संस्कृत में ही हैं। दर्शनशास्त्र विषय का 'भारतीयदर्शन' भाग पूर्ण रूप से संस्कृत से संबंधित है। इतिहास विषय का 'प्राचीन भारत का इतिहास' भाग संस्कृत से जुडा हुआ है। इतिहास के दो प्रकार के स्रोत होते हैं:- पुरातात्विक और साहित्यिक। दोनों की ही जानकारी के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान जरूरी है। चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद का महत्व स्पष्ट ही है। गणित में भी वैदिकगणित और बहुत सी प्रमेय संस्कृत की देन है। इस प्रकार संस्कृत का महत्व अंत:अनुशासनात्मक रूप से महत्वपूर्ण है। तकनीकी एवं प्रबंधन के बहुत से उच्च संस्थानों में गीता को जीवन-प्रबंधन और कार्य-प्रबंधन के तौर पर पढ़ाया जाता है। नासा की रिपार्ट के अनुसार संस्कृत भाषा अंतरिक्ष विज्ञान के लिये सर्वोत्तम भाषा है। संस्कृत को कम्प्यूटर की कृत्रिम बुद्धि के लिये भी सबसे उचित भाषा माना गया है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत भाषा और साहित्य को वर्तमान पाठ्यक्रम व शिक्षा प्रणाली में समुचित एवं समादृत स्थान दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि संस्कृत प्राचीन युग से लेकर अब तक अपने अस्तित्व एवं महत्व को बनाए रखे हुए है। भाषा विज्ञान व साहित्य की दृष्टि से संस्कृत का अध्ययन व अध्यापन आज भी महत्वपूर्ण है। उच्चारण की शुद्धता व लेखन की एक रूपता के कारण संस्कृत में बहुत कम दोष आते है। इसीलिए अंतरिक्ष विज्ञान एवं संगणक विज्ञान में संस्कृत को उपयुक्त भाषा के रूप में न केवल भारतीयों द्वारा अपितु विश्व की मूर्धन्य वैज्ञानिक संस्थाओं द्वारा स्वीकार किया गया है। आज योग के महत्व को सारा विश्व समझ रहा है और अपना भी रहा है। भारत और विश्व भर के विभिन्न विश्व विद्यालयों में संस्कृत को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार इस लेख से हमने आदि युग से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत की स्थिति, उत्पत्ति, विकास, विस्तार एवं वर्तमान स्थिति के बारे में तथ्यात्मक ढंग से जानने का प्रयत्न किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. द्विवेदी, डॉ. कपिल देव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
2. ऋषि, डॉ. उमा शंकर शर्मा, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चोखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 2004
3. शर्मा और व्यास, प्राचीन भारत का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
4. वर्मा, हरीशचन्द्र, मध्यकालीन भारत, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
5. गुरु, कामता प्रसाद, हिन्दी व्याकरण, नागरिक प्रचारिणी सभा, काशी इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग
6. रावत, प्यारेलाल, भारतीय शिक्षा, भारत पब्लिकेशन, आगरा
7. मध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर कक्षा 9 व 10 की गणित पुस्तक
8. राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित लेख
9. मैकॉलेज् मिनिट, 1835
10. वुड्स डिस्पेच, 1865
11. शास्त्री, डॉ. विनोद एवं सक्सेना, डॉ. शालिनी, अनुसंधान प्रक्रिया एवं पाठालोचन, प्रथम संस्करण 2007, राजस्थान ज्योतिष परिषद एवं शोध संस्थान, जयपुर